वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

अक्तूबर - 2016

* जीवन पथ कुछ और है
* अमेरीका के एक विचारशील जन का स्वप्न किस तरह पूरा हुआ
* विशेष सत्संग और सत्य धर्म बोध उत्सव

8 जनवरी सन् 1915
(देव आत्मा फरमाते हैं)

बनाने और ढाने दोनों बातों मे एक ही नियम काम करता है। दीवार बनाने में जैसे एक एक ईंट रखनी पड़ती है, एक के अनन्तर दूसरी और दूसरी के अनन्तर तीसरी रखने से दीवार बन जाती है वैसे ही ढाने में इस अमल की आवश्यकता है। पहले एक ईंट को निकालो, फिर दूसरी, फिर तीसरी, इसी तरह सारी दीवार बिलकुल ढै जावेगी। यही नियम अपने आत्मा में से अंह अनुराग आदि नीच शक्तियों को दमन करने और नाना प्रकार की उच्च शक्तियों को पैदा करने का है। प्रतिदिन की ज़िंदगी में जब ही किसी के संबंध में कोई अपमानकारी घटना हो, तब ही हाथ जोड़ो, माफी मांगो, उस हानि का जहां तक संभव हो, परिशोध करो, तब अवश्य अंह का अधिकार घटता जाएगा। जितना अधिक ऐसा अमल कर सकोगी, उतना ही इस नीच अनुराग के रदे घटते जाएंगे। फिर जब देखो कि तुम्हारे अंह पर उचित चोट लगने से तुम्हें दुःख नहीं होता, तब समझो कि यह नष्ट हो गया है। परन्तु जब तक ऐसी अवस्था न आवे, इस के रदों को बराबर धैर्य और हिम्मत के साथ निकालते जाने की आवश्यकता है। फर्ज़ करो कि यदि तुमने फीरोजपुर से लाहौर आना हो और तुम क़सूर में आ कर ही कहो, कि अब तो मुझ से और आगे जाया नहीं जाता, तो तुम लहौर न पहुंच सकोगी। इसी प्रकार से एक बार माफी मांग कर यादि तुम यह कहो कि अब तो मुझ से बार बार माफी मांगी नहीं जाती, रोज़ रोज़ तो मुझसे हाथ नहीं जोड़े जाते, रोज़-रोज़ मुझ से नीचा नहीं हुआ जाता, तो अंह नष्ट न होगा। जैसे हम अपनी शारीरिक रक्षा और पालन के लिए प्रतिदिन खाना खाते हैं, दिन में दो बार चूल्हा फूंकते हैं और इस के भिन्न प्रतिदिन कई अंगों के द्वारा गंद निकालने का काम भी करते हैं, ऐसा क्यों करते हैं? इसलिए कि हम जानते हैं कि ऐसा करने के बिना हम ज़िन्दा नहीं रह सकते। वैसे ही हमें अपने आत्मिक जीवन की रक्षा, शुद्धि और उन्नति के लिए भी प्रतिदिन उचित आहार पाने और अपनी मैल को धोने की नितान्त आवश्यकता है। हां यदि तुमने ज़िंदगी का सफर तै करना है, तो तुम्हें प्रतिदिन बनाने और ढाने के असूल को सामने रखना चाहिए और एक को पैदा करने और दूसरे को मिटाने के लिए यत्न करना चाहिए।

दुनिया में धर्म साधन के नाम से पूजा पाठ आदि तो बहुत जारी हैं, परन्तु उनसे शुभ फल कुछ नहीं निकलता। अब यह तुम्हारा फर्ज़ है कि तुम्हारे साधन दुनिया के लोगों के पूजा पाठ की न्याईं न हों। तुम्हारे साधनों की विशेषता होनी चाहिए, वरना यदि उनकी न्याईं तुम्हारे साधन भी तुम्हारे जीवन में कोई उच्च परिवर्तन लाने का काम न करें तो वह सब निष्फल हैं। ऐसे साधन किसी काम के नहीं।

यदि कहलाने वाले किसी तीर्थ स्थान पर जाने या गंगा में डुबकी लगाने से पाप चले जाते, वा कोई हानिकारक शक्ति नष्ट हो जाती, तो हम बड़ी खुशी से तुम्हें अपने किराया पर गंगा भेज देते और कहते कि एक दफा छोड़ तीन दफा डुबकी लगा आओ, परन्तु शोक! वहां डुबकी लगाने से न तो कोई नीच शक्ति नष्ट होती है और न ही कोई उच्च शक्ति पैदा होती है। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए अपने निज के सच्चे धर्म साधनों की आवश्यकता है और उस सारे कोर्स में से गुज़रने की आवश्यकता है कि जिस की हम शिक्षा देते हैं।

धर्म जीवन

खण्ड 29 अंक 10
अक्तूबर 2016
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

जीवन पथ कुछ और है

प्रत्येक मनुष्य का यह परम सौभाग्य है कि यदि उस तक देवात्मा का सदेश पहुंच जाए और उनकी शरण प्राप्त हो जाए। इससे अवश्य उसके आत्मा की रक्षा होती है और उसका कुछ न कुछ भला हो जाता है।

देवात्मा के देव प्रभाव किसी अंश में मिलने पर अकसर मनुष्य के मोटे पाप अर्थात नशा, मांसाहार, रिश्वत, मोटी बेईमानी आदि चले जाते हैं। झूठे देवी देवता छूट जाते हैं। मिथ्या पूजा पाठ बन्द हो जाते है। उनका सेवक बनकर देव समाज के वातावरण में उसका आना जाना बढ़ जाता है। कुछ कुछ समाज के विधान, उसके नियमों और शिक्षा का भी ज्ञान हो जाता है। उसके बहन भाईयों वा अन्य सम्बन्धियों तक भी प्रभाव कुछ कुछ पहुंचने लगते हैं। उनमें भी कुछ परिवर्तन देखने को मिलता है। सम्बन्धों में व्यवहारों में भी सुधार आने लगता है। इस प्रकार बाहर की दुनिया के लिहाज से उसका काफी भला हो जाता है।

फिर कई मनुष्य अपने काम काज करते हुए, सरकारी नौकरी करते हुए, या रिटायर होकर कुछ समाज सेवा का काम भी करने लगते हैं, इस प्रकार कुछ सभाओं में योग देने वा कभी कभी सभा करवाने का भी अवसर मिल जाता है। इस प्रकार सधारणत: मनुष्य विश्वास करने लगता है कि उसका बहुत भला हो रहा है। कोई बिलडिंग बनाकर, कोई किताबें छापकर कोई यादगारी स्थानों पर सेवाकारी होकर अपने जीवन की उन्नति समझते हैं, किसी सीमा तक इन सबसे भला भी अवश्य होता है। कोई कुछ पाप छुड़ाकर प्रफुल्लत होता है।

परन्तु अकसर देखने में आता है कि एक एक मनुष्य को सेवा का तो ध्यान होता है, परन्तु वह अपने असल जीवन को विसार देता है।

गुरू महाराज के प्रभावों के वातावरण से पहले न चाहकर भी जो कुछ परिवार्तन आया होता है केवल वहीं तक सीमित हो जाता है। जीवन आगे नहीं बढ़ता, आगे उच्च परिवर्तन की प्राप्ति की कोई इच्छा भी नहीं होती, इस प्रकार उच्च परिवर्तन का क्रम रुक जाता है, कई सूरतों में पहले उच्च परितर्वन में भी कमी आने लगती है। यदि ऐसा न होता तो आज देव समाज में उच्च परिवर्तन-धारियों की कतारें लग जाती और समाज का काम नीचे जाने की बजाए दिन दुगणी, रात

चौगणी तरक्की करता।

गुरू महाराज ने बार बार फरमाया है कि निर – अकांक्षित परिवर्तन काफी नहीं, अर्थात जो परिवर्तन देव प्रभावों में बैठकर, न चाहकर भी हमारे में हो जाता है। अकांक्षित परिवर्तन की आवश्यकता है अर्थात आगे उच्च परिवर्तन लाने के लिए हमारे भीतर प्रबल अकांक्षा हो। उसके लिए फिकर और संग्राम हो। परन्तु हम सुख अनुरागी मनुष्यों के लिए आगे उच्च बनने की ईच्छा ही पैदा नही होती।

कुछ हालात अनुसार देव समाज की गठन को जानने लगते हैं और उसके अंग बनने के लिए, उच्च पद प्राप्त करने के लालसी बन जाते हैं, कई गठन की किसी बुराई को दूर करने के लिए चाहने लगते हैं, परन्तु अपने जीवन का ध्यान छूट जाता है।

यही कारण है कि धर्म समाज में रहकर, उसकी गठन का अंग बनकर, एक वा दूसरा काम करके, अपने जीवन के सच्चे हित की इच्छा से खाली रहते हैं। सभाएं करवा कर भी ऐसे जन देव प्रभाव दायक मण्डल पैदा नहीं कर सकते जिससे उनके अपने भीतर वा दूसरों के भीतर निरन्तर आत्म हित की, उच्च परिवर्तन लाने की कोई ठोस ईच्छा पैदा हो सके। अपने जीवन, अपने आत्मा के फिकर से लापरवाह हो जाते हैं।

गुरू के मिशन में अपने ढंग से सेवाकारी होना चाहना और होना, बेशक बहुत मुबारक है, परन्तु इस सबसे क्या मनुष्य के जीवन की सच्ची सफलता होती है? ज़िन्दगी का समय (जो प्रतिदिन घट रहा है) सफल होता है? क्या इससे हमारी अपनी रक्षा और उन्नति का क्रम चल पड़ता है?

इसके लिए मनुष्य को बहुत संजीदगी से अपने सच्चे हित का फिक़र करना होगा।

सर्वप्रथम अपने भीतर की विनाशकारी शाक्तियों अर्थात समस्त नीच अनुरागों का प्रकृत बोध पैदा करना पड़ेगा। यदि काफी उमर बीतने पर भी मनुष्य को अपने भीतर कुल निम्न शक्तियों का ही ज्ञान न हो सके, तो उनसे बचने वा मुक्त होने का फिकर कैसे कर सकेगा। आम तौर पर मनुष्य को अपनी नीच शक्तियों का बहुत ही कम ज्ञान वा बोध है, वह अपने आपको अच्छा वा ठीक ही समझता और देखता है। यह देखने की नितान्त आवश्यकता है कि क्या वह किसी नीच अनुराग से मुक्त होने के संग्राम में पड़ा है या नहीं? यदि कर रहा है तो क्या कोई नीच अनुराग घटा है? यदि घटा है, तो कितना? आगे उसे घटाने के लिए कितने संग्राम की आवश्यकता है?

जिस मनुष्य को अपने किसी नीच भाव के घटने या बढ़ने का कोई बोध न हो, वह धर्म मार्ग से मीलों दूर और अन्धाधुन्ध चलकर अपनी शक्तियां बर्बाद करता रहता है।

फिर उसे यह आवश्यकता है कि उसे ज्ञात हो कि उसने कौन सा भाव पैदा करना है। यह प्रकृत बोध धर्म जीवन पाने के लिए जरूरी है।

धर्म मार्ग के मुसाफिर प्रत्येक मनुष्य के भीतर उच्च भाव के पैदा होने की अत्यन्त आवश्यकता है। क्योंकि किसी ठोस “उच्च भाव के बिना, उच्च गति

नहीं।" सब कुछ नीच गति में शामिल होता है। "कोई भी काम हो, वह शुभ भाव से हो (उच्च सात्विक भाव से) वर्ना सब कुछ करके भी आत्मा नीचे चला जाएगा" वक़्त रहते रहते प्रत्येक मनुष्य के लिए जल्दी से जल्दी एक एक उच्च भाव की उत्पत्ति और उन्नति का संग्राम अतिशय आवश्यक है।

यदि जीवन पाकर कोई उच्च भाव ही पैदा न किया, बल्कि अन्धेरे में रहकर, अपनी पहली मिली आत्मिक पूंजी भी घटा ली या नष्ट कर ली, तो वह जिन्दगी में सबसे बड़ी हार है। देवात्मा के दर को पाकर भी जीवन पूर्ण निष्फल खोना है।

ठोस उच्च भाव अपने लक्षणों से पहचाने जाते हैं। मनुष्य अपने ख़्याल ख़्याल में सब उच्च भाव धारी बने रह सकते हैं। वास्तव में उच्च भावों का घोर आकाल पड़ा हुआ है। उच्च भावों की पूंजी भी बहुत कुछ नदारद है।

जैसे हालातों में हम सब घिरे हुए हैं, या सारी उमर दिनचर्या रखते हैं, उनमें अपने नीच भावों को जानने की सच्ची ईच्छा तक पैदा होनी कठिन है। इसलिए आम साथी, जिस प्रकार अन्दर के भाव चलाते हैं, चले चलते हैं। अपने अपने परिचालक भावों का स्पष्ट ज्ञान न होता है और न ज्ञान पाने की कोई ईच्छा होती है।

किसी भी नीच अनुराग से मुक्ति मनुष्य जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि है। हम नीच अनुरागों के साथ, अर्थात स्वाद अनुराग, आलस्य अनुराग, काम अनुराग, धन अनुराग, मान, सन्मान अनुराग बड़ाई अनुराग, प्रशंसा अनुराग, स्वार्थ अनुराग, ईर्षा, द्वेष अनुराग के साथ भरे पड़े हैं। क्या इनमें से कोई नीच अनुराग भी हमें दिखाई देता है और उसे घटाने का संग्राम है? यदि नहीं है, जैसा कि हकीकत है, तो नीच अनुराग अपने आप तो घट नहीं सकते, अपने आप वह बढ़ने के लिए ही हैं।

नेचर के आत्मिक नियम अटल हैं। हमारी गतियां हमारा जीवन बनाती रहती हैं। उन्हीं उच्च वा नीच गतियों से हमारा जीवन बनता वा बिगड़ता है। उच्च गति करने के लिए पहले उच्च भाव पैदा होना आवश्यक है।

उच्च गति के लिए उच्च भाव को पैदा होने की आवश्यकता है। उच्च भाव के बिना कोई उच्च गति नहीं। अच्छा कारज करके भी उच्च भाव के बिना वह नीच गति ही बन जाती है। इसलिए जीवन में उच्च भावों की उपज मुख्य वस्तु है।

"उच्च भाव हृदय उपजाओ, धर्म मार्ग की दिग तब जाओ" कोई भी अपना भला चाहने वाला व्यक्ति, उच्च भाव पैदा करने से ग़फिल न रहे। यह उच्च जीवन की पहली आवश्यकता है। इस ओर आंखें बन्द करके अपने जीवन की सफलता की आशा नहीं कर सकते। उच्च भावों की प्राप्ति कैसे हो? इसके लिए क्या संग्राम होना चाहिए। हमें ठोस उच्च जीवन-धारी सच्चे मनुष्यों के सम्पर्क की आवश्यकता है। उनके जीवनों का बार बार अध्ययन करने की आवश्कता है। उच्च जीवन रखने वाले इन्सानों के जीवनों को बार बार सम्मुख लाने की आवश्कता है। उनके अपनी

अपनी योग्यता के अनुसार अनुकरण करने से उच्च भावों की कुछ न कुछ प्राप्ति हो सकती है।

गुरू महाराज उच्च भावों के सागर हैं, उनके देव प्रभावों को पाकर बीसियों सौभाग्यवान जन उच्च भाव-धारी बनकर, अपना जीवन सफल बना चुके हैं। सेवक दल में, या उच्च वर्ग के कर्मचारियों के उच्च भावों की सुन्दर घटनाएं हमें प्रभावित कर सकती है, उच्च प्रेरणाएं दे सकती है।

देवात्मा का मिशन ही उच्च भाव पैदा करने और नीच भाव मिटाने का हैं। इसलिए उनकी शरण पाकर, आरम्भिक उच्च परिवर्तन को प्राप्त होकर, आगे उच्च भाव पैदा करने की और नीच भावों से मुक्त होने की विधिवत कमाई करने की नितान्त आवश्यकता है। ऐसे ही एक, दूसरा काम करके उच्च भाव-धारी होने के भ्रम के शिकार होकर, अपना जीवन बर्बाद करने से बचने की आवश्कता है।

श्रद्धा, कृतज्ञता, दया, हानिपरिशोध आरम्भिक सात्विक भाव हैं कि जिन पर धर्म जीवन का भवन निर्मित हो सकता है।

श्रद्धा भाव धर्म का मूल है, इसे पैदा करना और विकसित करना परम आवश्क है। श्रद्धा भाव एक अति स्वर्गिय भाव है, जो मनुष्य पर उच्च बरकतों की वर्षा करता है। इसके बिना कोई धर्म जीवन नहीं होता। इसके लिए हमें क्रमवार, सारे उच्च भावों की उत्पत्ति के साधन वर्षों लगातार करने की आवश्कता है ताकि यह भाव कुछ स्थाई हो सकें। उच्च हस्तियों की खोज, उनकी संगत, उनके जीवनों पर निरन्तर चिन्तन, अध्ययन, उनका सम्पर्क, हमारे भीतर हमारी योग्यता के अनुसार उच्च भावों की उत्पत्ति में सच्चा सहायक हो सकता है।

हमारी ज़िन्दगी की सफलता इससे नहीं कि किसी धर्म समाज में हमें कितना मान सन्मान, पद-सुख सहूलतें या और अधिकार प्राप्त हैं, बल्कि इसके साथ है कि हमने अपने भीतर कौन कौन से उच्च भाव, कितनी मात्रा में उन्नत किए हैं। उच्च भाव ही जीवन स्त्रोत है, उच्च सुख देने वाले हैं। यही सच्चा जीवन धन है। सच्चा जीवन लक्ष्य नीच भावों से मोक्ष और उच्च भावों को उत्पन्न करना है।

बलदेव सिंह

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :- श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

अमेरीका के एक विचार शील जन का स्वप्न किस तरह पूरा हुआ?

शायद सन् 1888 ई. में अमरीका के एक बहुत बड़े विचार शील जन ने एक पुस्तक लिखी थी, कि जिस का नाम "परोपकारियों की बादशाहत" था। भूमिका में उस ने लिखा था, कि जिन विचारों का इस पुस्तक में वर्णन किया गया है, उन्हें शायद एक या दो सदी के बाद इन्सानियत समझ सके। वह ईश्वर के विश्वास को त्याग चुका था। प्रचलित मतों के खोखलेपन को उन्होंने अच्छी तरह से प्रगट किया था और मनुष्य प्रकृति का अध्ययन करते हुए उन्होंने लिखा था, कि लाखों और करोड़ों मनुष्यों के हृदय में जो शक्तियां पैदा हो चुकी हैं, वह शक्तियां ऐसे जनों के जीवन में अन्याय और अपहरण का कार्य करा रही हैं। और जब तक मनुष्य का हृदय ऐसी शक्तियों के अधिकार में रहेगा, तब तक अपहरण और अन्याय का कार्य जारी रहेगा। और मनुष्य जगत् में अनमेल भी अवश्य वर्तमान रहेगा। यदि मनुष्य मात्र में कोई उच्च परिवर्तन उत्पन्न करना है, तो यह जरूरी है कि मनुष्यों के हृदयों में ऐसे उच्च बोध शक्ति रूप में उत्पन्न किए जावें, कि जो उन्हें विवश एक दूसरे के हित में लगा दें। इस के भिन्न उन्होंने यह भी लिखा था, कि मैं ऐसा भी अनुभव करता हूँ, कि मनुष्य जगत् के विकास क्रम में एक ऐसा अविर्भाव होगा, जो अपनी ज्योति और शक्ति पहुंचाकर इस पाप भरी दुनिया में पापी जनों के हृदयों में ऐसा उच्च परिवर्तन लायेगा, कि वह एक ओर जानबूझकर किसी की भी हानि करने के अयोग्य हो जाएंगें। और दूसरी ओर जहां तक भी सम्भव होगा, वह कुछ न कुछ दूसरों की सेवा में लग जाएंगे। यह इस नेक जन का स्वप्न नेचर की अपनी गुप्त विधि के अनुसार पूरा हो चुका था और पूरा हो रहा है। ऐसा अद्वितीय और पूर्णत: अनोखा आविर्भाव हो चुका है, कि जो अपनी ज्योति और शक्ति से अधिकारी मनुष्यों में उच्च परिवर्तन ला रहा है। हमें इस प्रकार के उच्च परिवर्तन की असलियत को भी समझने की कोशिश करनी चाहिए। मनोविज्ञान के पंडित कुछ न कुछ बोध करते जाते हैं, कि जब तक किसी मनुष्य के भीतर उच्च भाव उस के आत्मा का अंग न बन जाएं और शक्ति रूप लाभ न कर ले, तब तक ऐसा जन उच्च जीवन धारी नहीं बनेगा। थोड़ी या अधिक परोपकार की लहर अनुभव करना या किसी न किसी समय एक या दूसरी प्रकार का कोई परोपकार का काम कर देना यह साबित नहीं करता, कि ऐसा जन इस अंग के विचार से परोपकारी है। उच्च बोध या उच्च अंग एक या दो बार लहरें उत्पन्न नहीं करता, एक या दूसरे समय में प्रकाश नहीं पाता, वह तो लगातार मनुष्य के हृदय में उच्च लहरें, उत्पन्न करता है और लगातार उच्च क्रियाएं कराता है। मैंने एक सच्ची कथा पढ़ी है, कि तीन चार साल की लड़की की माता गुजर गई, उस के पिता पहले ही गुजर चुके थे। उस यतीम और रोते हुए बच्चे का पड़ोसियों के हृदय पर उस की

अवस्था के अनुसार जुदा जुदा असर हुआ। कुछ जनों ने यह भाव प्रकाश किया कि हाय! यह लड़की कितनी अभागी है। यह कह कर संतुष्ट हो गए और अपने-अपने घरों को चले गए। कुछ जनों ने यह भाव प्रकाश किया कि इस को एक यतीम खाने में पहुंचाया जावे और वहां तक पहुंचाने में जो खर्च हो, उसमें हम मदद् करने को तैयार हैं। कौन उस को यतीम खाना में पहुंचावे? उस के लिए कोई तैयार न था, यतीम खाना दो सौ मील के फैसले पर था, आखिरकार एक स्त्री तैयार हो गई और वह इस बच्चे को साथ लेकर चल पड़ी। रास्ते में वह एक स्टेशन पर उतर गई। वहां से शायद बस पर जाना पड़ता था, वह अपनी एक सहेली के यहां चली गई और उसको सारा माजरा सुनाया। उसकी सहेली के हृदय पर उस कन्या का बहुत गहरा असर हुआ। उसने अपनी सहेली के पास छोड़कर चली गई। अब इस दयावान स्त्री ने दर्जी को बुलाया और कई प्रकार के कपड़े उस के लिए बनवाए। मुश्किल से चार पांच दिन गुजरे थे, कि अचानक उस स्त्री ने उस लड़की को रोते हुए सुना। वह बिल बिलाकर पुकार रही थी, कि काश यदि मेरी अम्मा होती! तो ..... लड़की के इस प्रकाश ने इस स्त्री के हृदय पर जादू का असर किया। उस ने लड़की को छाती से लगा लिया और कहने लगी कि क्या तुम मुझे अपनी अम्मा बनाओगी? बच्ची की खुशी की हद न रही, और वह इस दयावान स्त्री को चिपट गई। और उस दयावान स्त्री का बयान है, कि यह लड़की बड़ी होकर मेरे सम्बन्ध में मेरी अपनी बेटी से भी बढ़कर कृतज्ञ प्रमाणित हुई है। अब इस दयावान स्त्री के हृदय में उस लड़की के लिए दया शक्ति फूट आई बाकी स्त्रियों के हृदय में कुछ न कुछ भाव जरूर उत्पन्न हुआ लेकिन शक्ति रूप में नहीं।

उच्च जीवन के मुसाफिरों के लिए इस उच्च बोध के पाने की अत्यन्त आवश्यकता है कि जीवन उच्च बोधों वा अंगों को शक्ति रूप में पाकर बनता है न कि भाव प्रकाश करने से। और किसी नीच सुख अनुराग से सत्य मोक्ष तब प्राप्त होती है जब उच्च घृणा का भाव शक्ति रूप में वर्तमान हो। कभी-कभी किसी लहर का उत्पन्न होना काफी नहीं है। फिर भी न उत्पन्न होने से अच्छा है। परन्तु जो केवल लहरों की अवस्था में ही संतुष्ट रहते हैं वह अज्ञानी हैं। भगवान् देवात्मा तो उच्च अनुरागों के उत्पन्न करने के कार्य में लगे हुए हैं, और जब तक हमारे हृदयों में यह उच्च अंग शक्ति रूप में उत्पन्न नहीं होंगे, तब तक हमारी उन्नति का कार्य लगातार नहीं होगा, केवल भाव प्रकाश से हमारा मामला हल नहीं होगा।

शोक समाचार

बहुत दुःख और शोक की बात है कि श्रीमती शशि बाला खेरॉ जी का 3 अक्तूबर की सुबह अचानक निधन हो गया है। श्राद्ध की सभा 9 अक्तूबर 2016 ईतवार को रखी गई है।

बलदेव सिंह

9417230930, 2716914

विशेष सत्संग

(9 सितम्बर से 16 सितम्बर 2016 तक)

सहायकारी शक्तियों की सहायता से पिछले कई वर्षों की तरह सत्य धर्म बोध उत्सव 16 सितम्बर की शाम से 18 सितम्बर 2016 तक देव आश्रम में मनाया गया। उससे पहले एक सप्ताह का विशेष सत्संग रखा गया। इस सत्संग की सूचना के लिए सुन्दर निमन्त्रण पत्र छपवाए गए और साथी सेवकों को भेजे गए। टैलीफोन द्वारा भी सूचित किया गया। मासिक पत्रिकाओं में भी प्रोग्राम छापा गया।

कमरों आदि की सफाई, रसोई का प्रबन्ध स्थानी सेवादारों ने कई दिन पहले ही आरम्भ कर दिया था। साधन मन्दिर में पूजनीय भगवान की छवि के लिए पैडसटिल को पालिश करने, कर्मचारियों की फोटोज़ आदि को लगाने का काम जगदीष जी ने किया। पुराना झण्डा बदला गया। राशन का प्रबन्ध भी जगदीष जी ने किया। खाना बनाने वाले का प्रबन्ध किया गया।

सत्संग के लिए श्रीमान जगदीष जी, श्रीमान बलबहादुर सिंह जी और श्रीमान बलदेव सिंह जी पहले ही पंहुच गए थे। यात्रियों को ठहराने, उनके लिए बिस्तरों आदि का प्रबन्ध श्रीमान बलबहादुर सिंह जी और जगदीष जी ने बहुत संग्राम से किया।

सत्संग से पहले ही धर्म सम्बन्धी मंडी गज सिंह, पदमपुर, यमुनानगर और गंगानगर से पहुंच गए थे। करनाल से श्रीमान झंडा सिंह जी ने आते ही सेवा के काम सम्भाल लिए। श्री अकबरपुर से श्री चौहान जी एक नौजवान के साथ पहुंच गए थे। प्रवेश सभा में चण्डीगढ़ से 5 – 6 जन आ गए थे। 10 सितम्बर को प्रीती और उनके पुत्र पहुंच गए थे। ज़ीरकपुर से श्री संजय कुमार भी कई सभाअें में शामिल हुए। धीरे धीरे पंचकूला से, यूनीवर्सटी से बीबी रमन, रिटायरड डॉक्टर श्री मदान साहिब अधिकतर सभाओं में योग देते रहे। सभाओं के बाद कई जन हितकर बातचीत घन्टों तक करते रहे। इंगलैंड से 11 तारीख को सुखदेव जी, मंडी गजसिंह वाला से खेमचन्द जी, लखनऊ से अग्रवाल साहिब, मेरठ से दीपचन्द जी, नरेन्द्र जी पहुंच गए थे। फिर सुखदेव जी का लगभग सारा परिवार भी आ गया था। केसूपुर और मल्लेका से तीन धर्म सम्बन्धी पहुंच गए थे। संगरूर से एक श्रद्धावान पहुंच गए थे। 14 सितम्बर को यशपाल जी फरीदाबाद से आए। 16 तारीख सुबह की सभा के बाद ज़रूरी काम के कारण चले गए। उसी दिन डॉक्टर जैरथ जी और उनकी धर्म पत्नी भी पहुंच गए थे। 15 सितम्बर को गोनियाने से ज्ञान जी, मेरठ से गौतम जी पहुंच गए, इस प्रकार उत्सव से पहले बहुत रौनक हो गई। इस विशेष सत्संग के बाद 16 सितम्बर की शाम को सत्य धर्म बोध उत्सव की प्रवेश सभा आरम्भ हुई।

सत्संग की प्रवेश सभा 9 सितम्बर की शाम 4. 30 बजे हुई, इसके सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह

जी थे। भजन, देव स्तोत्र के गान के बाद सभापति जी ने इस सत्संग की सफलता के लिए हृदयगत भावों से सत्गुरू के दरबार में सहाय प्रार्थना की।

फिर उन्होंने बताया कि ऐसे शुभ अवसरों का मिलना बहुत बड़ा सौभाग्य है। मनुष्य को अपने अस्तित्व के विषय में जानने का, उस पर देव ज्योति में विचार करने का बहुत उत्तम अवसर मिलता है। अपने आपको जानना अपने परिचालक भावों को जानना है, उनके द्वारा हुई गतियों के परिणाम को जानना है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा की शिक्षा को जानने के लिए वैज्ञानिक विधि और नेचर के विकास के क्रम को जानना आवश्यक है। सभापति जी ने उदाहरणों के द्वारा कहलाने वाले बड़े लोगों की तबाही का नज़ारा पेश किया।

उसके बाद उन्होंने इस सत्संग से लाभ उठाने के नियमों को बताया कि निन्दा चुगली से बचें, हितकर बातचीत करें सेवा, साधन और पाठ करें, तो ही इन सभाओं में योग देना सफल हो सकता है।

10 सितम्बर सुबह 9.30 बजे – सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। उन्होंने बताया कि मनुष्य का मुख्य काम मोक्ष और विकास है। उच्च भावों का जानना, उन्हें पैदा करना और उनका विकास करना है। हर धर्म में अपने ईष्ट की महिमा गाई जाती है, उनसे अधिकतर दुनियावी सुख समानों की प्राप्ति के लिए कामना की जाती है। मनुष्य सुख अनुरागी होने के कारण अन्धेरे में रहता है। हम तो अपने शरीर के विषय में भी अन्धेरे में रहते हैं। सभापति जी ने अपनी अन्धकार ग्रस्त अवस्था का दिल के गहरे भावों से वर्णन किया। अन्धेरे में माता का उपकारी रूप भी नज़र नहीं आता था। मनुष्य को अपने नीच सुखों के अन्धेरे को जानने के लिए देव प्रभावों की अतिशय आवश्यकता है। मैं इतने अन्धेरे में था कि अपने आपको निर्दोष समझता था और समाज की सेवा करने के लिए आया था। देवप्रभावों के द्वारा कुछ अन्धकार दूर हुआ और मेरे भले का द्वार खुल गया। देव ज्योति आत्मिक दर्पण का काम करती है। इसके बिना मनुष्य को अपना दोषी, अपराधी, अन्धकार ग्रस्त रूप दिखाई नहीं देता। मनुष्य को इसकी अतिशय आवश्यकता है।

10 सितम्बर शाम 4.30 बजे – सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि धर्म प्राप्ति किसी एक या दूसरे धर्म का विश्वासी होना नहीं, न ही किसी का नाम लेना धर्म है, यह जो विश्वास विश्व व्यापी हो रहा है। धर्म अलग अलग नहीं हो सकते। केवल नाम जपना और बाकी खाना पीना, मौज मस्ती करना और सो जाना धर्म नहीं। औरों की जान लेना, उनके अधिकारों का हनन करना, न केवल धर्म नहीं बल्कि शेर और भेड़िया बनना है। स्वार्थ में जीवन व्यतीत करना, जीवन व्यर्थ खोना है। परम पूजनीय भगवान के प्रभावों के द्वारा धर्म की समझ वा प्राप्ति हो सकती है। धर्म स्वार्थ से निकलकर परोपकार का जीवन जीना है। श्रद्धेय श्रीमान कनल जी, श्रीमान गुरूबख़्श सिंह जी के जीवन की सुन्दर घटनाएं बताई। जीत सिंह जी की घटना द्वारा बताया गया कि दूसरों के भले के लिए

अपनी शक्तियां लगाना धर्म का कारज है। देवात्मा के देव प्रभावों द्वारा धर्म की समझ आती है और धर्म शक्तियां पैदा हो सकती हैं।

11 सितम्बर सुबह 9.30 बजे – सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। अर्चन, भजन और देव स्तोत्र का गान और व्याख्या की गई। सभापति जी ने महान सुकरात के इन शब्दों की Know Thyself (अपने आपको जानो) का ज़िकर करते हुए बताया कि मनुष्य शरीर को ही नहीं बल्कि आत्मा को जानना अपने आपको जानना है। जिसे यह ज्ञान प्राप्त नहीं होता, उसकी सब डिगरियां और ज्ञान किसी काम का नहीं मनुष्य इस विषय में पूर्णत: अबोधी है। इस बोध के बिना मनुष्य बर्बाद होने और औरों को करने के लिए मजबूर है। (1) मनुष्य के लिए अपने अस्तित्व का ज्ञान (2) विश्व का ज्ञान (3) और देवात्मा का ज्ञान पाना आवश्यक है। आसाराम, रापमाल, चड्डा भाई क्यों जेल में हैं क्योंकि उन्हें अपनी शक्तियों का ज्ञान नहीं था और नहीं है। अपना ज्ञान अपने भावों, अपने को चलाने वाली शक्तियों का ज्ञान होता है। ऐसे ज्ञान की प्राप्ति के लिए देवात्मा के देव प्रभावों की प्राप्ति की आवश्यकता है, जो सत्संग में प्राप्त होते हैं। इसकी कीमत को जानना आवश्यक है।

11 सितम्बर शाम 4.30 बजे – सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि मनुष्य सामाजिक प्राणी है, उसकी रक्षा और विकास समाज में रहकर है। उसका सारा ज्ञान वा बोध समाज की देन है। समाज में ही मनुष्य का सब पक्षों में विकास होता है। विशेष हस्तियों की जो देन समाज को होती है, उससे समाज में गुणों का विकास होता है। नैतिक कीमतें भी हमें समाज से ही मिलती हैं। स्त्री जाति का सन्मान, छूतछात से घृणा, मानव अधिकार आदि पुरातन समाज में नहीं थे। सभापति जी ने बताया कि परम पूजनीय भगवान देवात्मा सम्बन्धों में उच्च भावों को विकसित करके और नीच भावों को नष्ट करके स्वर्गिय रिश्ते बनाते हैं। इस प्रकार वह मानव जाति को बरकतों से मालामाल करते हैं। सम्बन्धों में उच्च व्यवहारों का नाम धर्म है। देव प्रभावों को पाकर मनुष्यों के व्यवहार बदलते हैं और वही हानिकारक जन समाज के लिए वरदान बन जाते हैं और दूसरों को भी उच्च प्रेरणाएं देते हैं। उच्च धर्म सम्बन्धियों की उदाहरणें दी जिनके जीवनों ने उच्च व्यवहारों ने स्वर्ग पैदा कर दिया। बड़े जोश से उन्होंने सारा वर्णन किया और वह अपने सौभाग्य को अनुभव कर रहे थे।

12 सितम्बर सुबह सभापति श्रीमान किशन सिंह जी ने बताया कि मनुष्य को उसके भाव चलाते हैं। मनुष्य दो जीवित अस्तित्वों द्वारा निर्मित है। मनुष्य का मूल स्वभव नीच सुख अनुरागी और नीच घृणाकारी है। इससे वह अपनी और औरों की हानि करने के लिए मजबूर है। नशा अनुरागी, काम अनुरागी और आलसी दुखों, हानियों और बर्बादियों के घर बन जाते हैं। मनुष्य की असली सुन्दरता और सच्चा सुख उसके शारीरिक, मान्सिक और आत्मिक विकास प्राप्त अवस्था में है। सभापति ने उच्च भावों की महिमा पर ब्यान किया। देव प्रभावों के द्वारा सच्चे और विकासकारी व्यवहार सम्भव

हो जाते हैं। एक महान सिक्ख और शिवा जी के श्रद्धा भाव द्वारा की गई प्रभावदायक घटनाओं का वर्णन किया। सेवा वा त्याग के द्वारा सच्ची खुशी प्राप्त होती है। नीच भावों द्वारा बादशाह औरंगजेब की तरह जीवन बर्बाद हो जाता है।

12 सितम्बर शाम 4.30 बजे सभापति श्रीमान बलबहादर सिंह जी ने नेचर के विशाल रूप का वर्णन किया नेचर में जो परिवर्तन हो रहा है, वह उसकी अपनी शक्तियों के द्वारा होता है। परिवर्तन की विधि अटल है। यह परिवर्तन नियमों के अनुसार होता है। इन्हीं को अटल विधि कहते हैं। इनका सत्य ज्ञान मनुष्य के लिए आवश्यक है कि क्या सम्भव है और क्या असम्भव है। इन अटल नियमों के विरूद्ध कोई भी व्यक्ति कोई घटना नहीं कर सकता। इसलिए कोई करामात सम्भव नहीं। मनुष्य के लिए आवश्यक है कि वह इस नियम को भी जाने कि उसकी जन्मजात योग्यता और वातावरण के आधार पर ही उसका कुछ भला वा बुरा हो सकता है। विरासत पर हमारा ज़ोर नहीं, वातावरण हम स्वंय चुन सकते हैं। परम पूजनीय भगवान के अनुसार उच्च वातावरण हमारा विकास करता है। नीच वातावरण मनुष्य के लिए घातक है। देव प्रभावों के वातावरण में हमें अपना रोगी वा हानिकारक रूप दिखाई देता है। एक ओर अपने नीच भावों की भयानकता का ज्ञान होता है, दूसरी ओर उच्च भावों की सुन्दरता दिखाई देती है। नेचर और उसके नियमों का सभापति जी ने बड़े जोश से भरकर ब्यान किया।

13 सितम्बर सुबह 9.30 बजे सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि कोई बिमार होना नहीं चाहता, कोई बुरा बनना नहीं चाहता, प्रत्येक मनुष्य अच्छा बनना चाहता है परन्तु ऐसा होता नहीं। मनुष्य के बुरे भाव उसे बुरा बना देते हैं। अंह भाव हर मनुष्य पर हावी रहता है, यही उसका दुखांत है। मनुष्य के इस विनाशकारी भाव का Antidote(ऐंटीडोट) श्रद्धा का भाव है। सुन्दरता और महानता संसार के भीतर है, परन्तु श्रद्धा के बिना यह नज़र नहीं आती। इसके बिना मनुष्य वैसा ही है जैसे सैल के बिना बैटरी। श्रद्धा महानता दिखाती है और साथ ही अपनी तुच्छता दिखाती है। महानता का गुणगान करवाती है। श्रद्धाभाजन के मिशन में सेवाकारी बनाती है। श्रद्धा का बीज विरासत में मिलता है, उच्च वातावरण वा उच्च साधनों के द्वारा विकसित होता है। श्रद्धा महान जनों के गुणों को ग्रहण करने में सहायक होती है। उसके बाद सभापति जी 2 – 3 महान जनों की महानता का वर्णन किया। फिर 2 – 3 और जनों ने भी महान जनों के गुणों के विषय में बताया। यह सभा बहुत प्रभावशाली थी।

13 सितम्बर शाम 4.30 बजे। सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि हमारे गुरू फरमाते हैं कि हमारे नीच भाव हमारे सबसे बड़े शत्रु हैं। नीच भाव अन्धा, कठोर और अन्यायकारी बनाते हैं। चोर, डाकू, कातिल और आत्मघाती बनाते हैं। मनुष्य को सत्य लक्ष्य से भ्रष्ट करते हैं। समझ को विकारयुक्त

बना देते हैं। काम अनुराग बहुत नीच भाव है। यह न केवल मनुष्य के लिए स्वयं के लिए घातक हैं, परन्तु दूसरों की भी महा हानि करता है। बहुत सी उदाहरणों के द्वारा इन नीच अनुरागों की घिनौनी तस्वीर पेश की। इन रोगों से मुक्त होने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया।

14 सितम्बर 2016 सुबह 9.30 बजे सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने श्रद्धा की सभा को दुहराते हुए, शुक्रगुज़ारी के सुन्दर भाव पर रोशनी डाली। सभापति जी ने शुक्रगुज़ारी के सब सतरों का सिलसिले वार वर्णन किया, पहली स्टेज उपकारियों के उपकार नज़र आएं, फिर उनके उपकारों की सुन्दता नज़र आए। उनके लिए धन्यवाद का भाव पैदा हो, उनकी सेवाओं को महसूस करके हृदय उनके आगे झुकने के लिए मजबूर हो जाए। तीसरा पड़ाव है उपकारियों के लिए सेवा करने का भाव प्रबल हो, और तन, मन, धन से उनकी सेवा करके सच्ची तृप्ति अनुभव हो, और ऐसा करके अपना सौभाग्य अनुभव हो, और सेवा का भाव बढ़ता जाए।

सभापति जी ने फरमाया कि कोई जन Self made नहीं होता। हमारे ऊपर बेशुमार उपकारों की वर्षा हुई है। सभापति जी ने एक चरवाहे की घटना बताई जो वज़ीर बन गया, परन्तु अपने उस उपकारी को नहीं भूला। हररोज़ चरवाहे के कपड़े डालकर बादशाह को धन्यवाद देता कि "मैं यह था, वज़ीर आपका बनाया हुआ हूं।" कृतघ्नता सबसे बड़ा पाप है। सभापति जी का ब्यान बहुत प्रभावशाली था, उसके बाद श्रीमान बलबहादुर सिंह जी और झंडा सिंह जी ने अपने उपकारियों के उपकारों का वर्णन किया। गुरू के प्रभावों की वर्षा योग्यता अनुसार सब दिलों पर हो रही थी।

14 सितम्बर शाम 4.30 बजे – सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बताया जैसे और नीच अनुराग और मनुष्य को अन्धकार युक्त बना देते हैं, धन अनुराग में दोष दिखाई नहीं देता। यह शरीफों का रोग है। इससे मनुष्य चोर, डाकू, कातिल, अपहरणकारी, रिश्वतखोर तो बनाता ही है। यह अनुराग अपने शरीर का भी बोधी नहीं रहने देता। कई उदाहरणों से स्पष्ट किया कि धन अनुराग मनुष्य का लक्ष्य ही धन कमाना बना देता है। इस अनुराग ने बहन को पूरे परिवार का कातिल बना दिया। भाई भाई का दुश्मन बना हुआ है। इस सब की तह में धन का अनुचित प्यार है। यह मीठा ज़हर है। जो जीने का साधन मात्र था, वह जिन्दगी का लक्ष्य बन जाता है। गुरू हमें इसका भयानक रूप दिखाकर इसकी कैद से छुटकारा दिलवाते हैं। मनुष्य को यह धन कमाने की अन्धी दौड़ के चंगुल से बचाते हैं। परम पूजनीय भगवान ने धन के प्यार में पागल जनों को धन के बहुत बड़े दानी बना दिया और इस मोह से आज़ादी दिल दी। धन्य हैं ऐसे सत्गुरू!

15 सितम्बर सुबह 9.30 बजे। सभापति जी श्रीमान बलदेव सिंह जी। "मैं कृतज्ञ भाव उपजाऊं" नामक भजन का गान किया गया। फिर कृतज्ञ भाव के सब अंगों का वर्णन करते हुए बताया कि जो मरते हुए को बचाए उससे बड़ा कोई उपकारी नहीं लगता। एक

कृतज्ञ लड़की की कहानी सुनाई जिसने अपने अध्यापिक को बार बार प्रार्थना करके अपने पास अमरीका में बुलाया और उन्हें ज़बरदस्ती तोहफे दिए, इस भाव से कि जहां वह पहुंची थी, उस अध्यापिक की कृपा थी। उत्तम सिंह सूबेदार के बेटे ने अपने पिता के उपकारी अंग्रेज अफसर के बेटे को बचाते हुए फौज में अपनी जान दे दी। श्रीमान गोपीचन्द जी के उपकार को श्रीमान राम सिंह जी कभी नही भूले। जब वह मोगे आते तो उनकी हर प्रकार की सेवा करते। एक जन को किसी उपकारी ने बहुत गरीबी की हालत में 5 पौंड दिए थे, वह सारी उमर प्रैज़ीडैण्ट बनकर भी नहीं भूला और वह हर वर्ष 5 पौंड देते रहे, और उसे बागों का मालिक बना दिया। सारा ब्यान बहुत ही प्रभावदायक था। फिर अशोका जी ने कुछ उपकारियों के उपकारों का वर्णन किया।

15 सितम्बर 2016 शाम 4.30 बजे।

सभापति श्रीमान बलबहादुर जी ने बताया कि घृणा क्या होती है। कब पैदा होती है? जब मनुष्य के किसी सुख पर चोट लगती है तो झट घृणा पैदा होती है। मनुष्य गुस्से से भर जाता है। अपने किसी विश्वास, मत, इच्छा, अभ्यास पर चोट लगने से आत्मघात करने तक की नौबत आ जाती है। बच्चों को जितना चाहते हैं, उतना खर्चा न मिले, जहां शादी करना चाहते, वह न हो, तो आत्मघात की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। छोटी सी बात पर चाचा भतीजे की बहस हो गई, चाचा ने भतीजे को मार दिया। अब वह जेल में है और रो रोकर पछता रहा है। कि मैंने क्या कर दिया। घृणा मनुष्य को पागल बना देती है। गुरू महाराज के प्रभावों से श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी ने अपने अंह और घृणा से मोक्ष पा ली थी। जो जन उन्हें कष्ट देते थे वह उनके लिए भी शुभ कामना करते थे।

श्रीमान जी के ब्यान के बाद श्रीमान जगदीष जी अपनी नीच घृणा से एक दिन जो नर्क पैदा किया, उसको ब्यान करते हुए जारोकतार रो रहे थे। पश्चाताप के आंसुओं से अपने दिल की मैल को धो रहे थे। सब के दिल पिघल रहे थे।

16 सितम्बर 2016 सुबह 9.30 बजे।

सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया गुरू ने अपनी रोशनी में कितने जनों को अपने नीच और कुत्सित कर्मों को दिखाया है। हम अनुचित नीच भावों के चश्मे हैं। ऐसे नीच कर्मों के विकारों से शुद्ध होने के लिए परिशोध की आवश्यकता है। सरदार हरनाम सिंह जी को जब रोशरनी मिली तो पशुओं के पक्के शिकारी उन्हे दाना पानी देने लगे। नौकर से उसके गांव में 70 मील जाकर क्षमा मांगी। लड़कियों को मार देते थे, लेकिन उनके घर में फिर लड़कियों की किलकारियां गूंजने लगी। और भी कई परिशोध की घटनाएं बताई। परिशोध के बिना हृदय शुद्ध नहीं होता। गुरू की ज्योति हमारी काली सूरत दिखाती है। डा० जैरथ जी ने भरी सभा में अपनी पत्नी के पैरों मे पगड़ी रखकर एक महोत्सव की सभा में क्षमा मांगी थी। अधिकारी आत्माओं को परिशोध के द्वारा अपने आत्माओं को शुद्ध करने की आवश्यकता है।

सत्य धर्म बोध उत्सव

16 सितम्बर 2016 शाम 4.30 बजे। सभापति श्रीमान बलबहादुर सिह जी। सर्व प्रथम "हमारे पूजनीय सत्गुरू, जी तुम हो धन्य, तुम हो धन्य" नामक भजन का गान किया गया। फिर पूजनीय भगवान की छवि का अर्चन, देव स्तोत्र का गान और व्याख़्या की गई। फिर सभापति जी ने उत्सव की सफलता के लिए आर्शीवाद प्रार्थना की। फिर जगदीष जी द्वारा प्रार्थना विषयक भजन का गान किया गया।

फिर सभापति जी ने बताया कि इस उत्सव की विशेषता क्या है? इसका लक्ष्य हमें अपने अस्तित्व, विशेषकर अपने आत्मा के विषय में ज्ञान प्राप्त करना है। उन्होंने आने वाले धर्म सम्बन्धियों का खड़े होकर स्वागत किया और कामना की कि सब ने इन दिनों में कुछ न कुछ अपने विषय में ज्ञान प्राप्त करा है। इस उत्सव में कैसे कैसे नज़ारे पैदा होते हैं, उनकी बहुत सुन्दर उदाहरणें पेश की गई। इस उतसव से लाभ उठाने के लिए कुछ नियम बताए और सबका हार्दिक धन्यवाद किया।

17 सितम्बर 2016, सुबह 9.00 बजे। सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। विषय : आत्म अबोधता की हानियां और आत्म बोध के लाभ-पूजनीय भगवान की छवि द्वारा अर्चन, देव स्तोत्र का गान और व्याख़्या, आर्शीवाद प्रार्थना के बाद "मुझको मेरा बोध कराओ" नामक भजन का जगदीष जी ने बहुत गहरे भावों से गान किया।

फिर सभापति जी ने बताया कि हम सब अपने विषय में गहरे अन्धकार में भटक रहे हैं, हानि और दुख उठाते हैं। यहां कुछ जन हैं जो शरीर के सम्बन्ध में बहुत फिकर करते हैं। नियमित रूप से सैर और व्यायाम करते हैं।

हम कुछ न कुछ शरीर का बोध रखते है। फिर एक दाना गेहूं का दिखाकर श्रीमान जी ने बताया कि इस दाने में सटारच के ईलावा जीवनी शक्ति है, जिसमें और पौधे बनाने की क्षमता है। हम भी केवल शरीर नहीं, हमारे भीतर जीवनी शक्ति ही मुख्य और कीमती है। उसके ऊपर भी नेचर के नियम काम करते हैं। उसमे परिवर्तन होता है, उसका विकास सबसे बड़ा लाभ है और उसकी हानि सबसे बड़ी हानि है।

आत्म अबोधता क्या है? इस सम्बन्ध में कुछ प्रश्न जानने ज़रूरी हैं। आत्मा क्या है? उसकी गठन क्या है? आत्मा के कौन कौन से रोग हैं? आत्मा का पतन क्या है? आत्मा की मोक्ष क्या है? आत्मा का विकास क्या है। अपने आत्मा के परिवर्तन का बोध ही आत्म बोध है। उदाहरणों द्वारा परितर्वन के विषय में बताया गया। धन के प्रेम का बढ़ जाना, अंह, मान, बड़ाई, इर्षा द्वेष का बढ़ जाना आत्मा के रोग हैं, जो जीवनी शक्ति को हानि पहुंचाते हैं। श्रद्धा कृतज्ञता, सहानुभूति, हानि परिशोध के भाव आत्मा का विकास करते हैं, नीच गतियों का बोध ही आत्म बोध है। यह सभा बहुत ही सरल और जाग्रित करने वाली थी। धन्य है परम पूजनीय भगवान जिन्होंने हम अन्धों, अधूरों को सर्वश्रेष्ट शिक्षा देकर कुछ होश दी है।

17 सितम्बर 2016 11 बजे दूसरी सभा। सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। इस सभा में भी पिछली सभाओं की तरह 60-65 जन शामिल थे। आत्मा के सम्बन्ध में पूजनीय देव शास्त्र खण्ड 5-4 में से पूजनीय भगवान के आदेशों का पाठ और बहुत सुन्दर और रोचक ढंग से उनकी व्याख़्या की गई। देव प्रभाव मनुष्य आत्मा के मोक्ष और विकास के लिए कितने आवश्यक, इस विषय में भी बहुत सुन्दर ब्यान किया गया।

17 सितम्बर 2016 शाम 4.30 बजे । सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी इस सभा का विषय था, "भगवान देवात्मा के अद्वितीय देव प्रभावों का अद्वितीय कारज" सभापति जी ने बताया कि इस विश्व में स्थूल रूप भी है और सूक्ष्म रूप भी है। स्थूल अस्तित्व हमें दिखाई देते हैं। सूक्ष्म रूप भौतिक आंखों से दिखाई नहीं देता। सुगन्ध और दुर्गन्ध देखी नहीं जा सकती। आक्सीजन वा और गैसों के सूक्ष्म प्रभावों को ही देख सकते हैं। प्रत्येक अस्तित्व, प्रत्येक मनुष्य प्रभाव छोड़ता है और वह प्रभाव दूसरे अस्तित्व ग्रहण करते हैं। भले इन्सानों के भले असर होते हैं। जैसे एक राजा जो दवाई लेने से इन्कार करता था, तो पंखे पर दवाईयों को छिड़क कर उसे झुलाते रहे और दवाईयों के सूक्ष्म असरों ने उसे तन्दरूस्त कर दिया। बुरे असर बुरा बनाते हैं। देव प्रभावों के असर मनुष्य की काया कल्प कर देते हैं। श्रीमान हरद्वारी लाल जी, सवित्री जी सिद्धू की जिन्दा उदाहरणें हैं। श्रद्धेय श्रीमान गुरूवन्त सिंह, श्रीमान रूप चन्द जी को क्या से क्या बना दिया। झण्डा सिंह जी, यहां बैठे हुए हैं, उन्हें मां के लिए सेवाकारी बना दिया। यह प्रभाव सम्बन्धों को स्वर्गीय बना देते हैं। श्रीमान मनोहर लाल जी इन प्रभावों से दूर चले गए परन्तु एक दिन के बाद ही उन्होंने इन प्रभावों की अहमियत को समझा और आने के लिए प्रार्थनाए करने लगे और पुकार उठे कि अब यहां से मनोहर लाल की लाश जाएगी। देव प्रभावों की महिमा को बहुत ज़ोरदार शब्दों में चित्रित किया गया।

18 सितम्बर 2016 पहली सभा 8.30 बजे। सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी"बचाना भरती रूहों को मिशन अपना बनाया है" नामक भजन का गान किया गया। फिर श्रीमान बलदेव सिंह जी ने धन, जन की अपील की और बताया कि क्या रूह मर जाती है। देव समाज का काम मिथ्या और पाप मिटाने का है। यही रूह को मारने वाले हैं। देवात्मा के देव प्रभाव एक जैन मुनि को सभा में मुंह काला करके बैठने को मजबूर कर देते हैं और वह पुकार उठते हैं कि मैं चोर हूं। यह काम किसी और स्थान पर नहीं होता। एक एक डॉक्टर पुकारता है कि मैंने किसी के रूपये चुराए हैं, जब तक परिशोध नहीं करता मैं सेवक नहीं बन सकता। नीच मनुष्यों में उच्च भाव पैदा करता है यह वातावरण। भारत का गौरव हमारे चरित्र के ऊंचा उठने से बढ़ेगा। चरित्र में ईमानदारी आवश्यक अंग है। मुझे यह काम बचपन से आकर्षित करता रहा है। कोई जन अपना समय देने आदि के लिए तैय्यार हो तो बताएं। घर में ईतवार को ज़रूर सभा करांए (1) सुभाष जी ने कहा कि मैं कोशिश करूंगा (2) डॉक्टर जैरथ

जी ने कहा कि वह सभा किया करेंगे (3) सरताज सिंह जी अपने स्कूल में नीति करवाते हैं और जारी रखेंगे इसके बाद दान की अपील की गई, जो आगे दी जाएगी (4) झंडा सिंह जी ने भी संग्राम करने का प्रण लिया।

भाव प्रकाश

श्रीमान यशपाल जी इस सभा में बैठकर मुझे अपनी Integerity में मिलावट महसूस हुई है। उन्होंने अपनी एक घटना का वर्णान किया। उनकी आंखे भर भर कर आ रही थी। अपनी कमी बताने में मैं सोचता हूं कि मेरी शक्ल क्या बनेगी? उनका ब्यान भी गुरू की महिमा को दर्शाता था।

श्रीमान झंडा सिंह जी :- इस सत्संग में आकर बहुत लाभ हुआ हैं। आत्म बोध की सभा से बहुत प्रभावित हुआ हूं। बहुत कुछ नई रोशनी मिली है। अपने घर जाकर शुभ संग्राम किया करूंगा। वहां सभा करवाने का प्रयास करूंगा इस पद ने बहुत प्रभावित किया।

"मिटादे अपनी हस्ती को, गर कुछ मर्तबा चाहे,
दाना खाक़ में मिलकर हीं गुलो, गुलज़ार होता है।"

श्रीमान सुखदेव जी (लण्डन) मैं महोत्सव के बाद मीडिया के द्वारा समाज का काम करने का यत्न करूंगा। इन सभाओं से मुझे बहुत लाभ हुआ है। भगवान तो हैं नहीं, उनके अद्वितीय ग्रन्थ हैं। उनके अध्ययन और फैलाने का काम करना है। मुझे बड़ा सौभाग्य अनुभव हो रहा था कि मेरे बहन जी, जीजा जी और अन्य परिवारिक जन यहां सेवाकारी हो रहे हैं। उन्होंने अपनी व्याकुलता प्रगट करते हुए बताया कि दिल्ली के एक सज्जन ने "देवात्मा दर्शन" बड़ी शानदार पुस्तक लिखी है, मुझे कहने लगे कि आप सोते कब हो? गुरू महाराज के कारज की चिन्ता लगी रहती है, नींद उड़ जाती है। योग्यता न होने पर भी जो हो सके संग्राम करना है। मेरे पास नीच जीवन के खोने के सिवा कुछ नहीं। कुछ नहीं सात्विक शक्तियों को पैदा करने का स्तर गुरू महाराज के साथ आत्मिक सम्बन्ध जोड़ने का स्तर बहुत ऊंचा है। श्रद्धेय श्रीमन देवत्व सिंह जी और श्रद्धेय जी का महान जीवन बार बार सामने आ रहा था। गुरू दर की प्राप्ति का इतना बड़ा सौभाग्य मिला है, उतनी योग्यता नहीं। दिल चाहता है कि गहराई से सेवाकारी हो सकूं। मेरे सारे सम्बन्धी इस सौभाग्य को समझ सकें। प्रिंसीपल सरताज जी एक किताब का अनुवाद कर रहे हैं, इनका यह बड़ा सौभाग्य है, आत्म-कथा Matchless किताब है। मैं तो अपने को अनपढ़ जैसा ही समझता हूं। काश! योग्य और विद्वान आंए और गुरू का कारज करें।

श्री ऐस एन मदान साहिब (Retd. Director Hry. Govt.) - मैं पिछले 10 दिन से सभाएं सुन रहा हूं, विशेष कर सुबह की। मुझे बड़ा सौभाग्य अनुभव हो रहा है। भगवान देवात्मा की शिक्षा से बहुत उपकार महसूस होता रहा है, जिन्होंने मेरी बिना जान पहचान के Merit पर मुझे सरकारी नौकरी के लिए चुना था। मैं जितना उनका सन्मान करना चाहिए, वह पूरा नहीं कर सका, उल्टा एक बार ऐसा कुछ हुआ, जिससे उनको सताया गया। वह नज़र

आकर दुखी करता रहा, अब मैं उनके पास जाऊंगा और उनसे क्षमा मांगूगा। मुझे महसूस होता रहा कि आप लोग बड़े महान हो जो इस मिशन को चला रहे हो। आप सब उपकारी महसूस होते रहे। सुखदेव सिंह जी के बारे सुना, उनके उत्साह और जोश को देखकर सन्मान पैदा होता रहा। हम सब का यह कर्तव्य बनता है कि हम अपनी शक्ति से बढ़कर संग्राम करें, जो दूसरों को भी लाभ पहुंचे। मैं शरीर को ही मुख्य समझता रहा। पहला सुख निरोगी काया, दूसरा सुख घर में माया, तीसरा सुख सुलखनी नार आदि। मैं बहुत धर्मो में गया हूं। सनातन धर्म, ब्रह्म कुमारी, आर्ट आफ लिंविग, सहज मार्ग और भी कईयों में गया। मैं नेचर को साईस पढ़ने के कारण मानता था, परन्तु कोई धर्म सांईस को लेकर नहीं चलता। देव धर्म ही एक ऐसा धर्म है, जिसमें नेचर और विज्ञान को आधार माना जाता है। निर्मल बाबा का ब्यान किया कि कैसा धोखा लोगों के साथ हो रहा है। बताया कि एक पड़ोसी किसी बाबा से घूटनों का ईलाज करवा रहे हैं। मिथ्या विश्वासों ने भारत के भीतर तबाही मचाई हुई है। आप सब का तहदिल से धन्यवाद करता हूं।

डाक्टर सी. एस. जैरथ जी देहरादून: – एक बात बार बार जेहन में साफ होती जाती है कि मुझे भगवान के मिशन के बारे, शिक्षा के बारे में कुछ भी पता नहीं। किताबें पढ़ी, विकासालय की सभाएं सुनी, परन्तु बहुत शोक कि जब भी सत्संग से परे होता हूं तो जीवन नीचे चला जाता है, यहां आकर बहुत गहराई से यह अनुभव हुआ है।

मेरी धर्म पत्नी बहुत योग्य और सेवाकारी हैं। मैंने समाज के लिए कुछ नहीं किया, यदि करता रहता तो रूहानी तौर पर जिन्दा रहता। मेरे पिता जी ने समाज और धर्म सम्बन्धियों से जोड़ा, अब मैं भी कुछ करना चाहता हूं। इस निराली शिक्षा को और अधिकारी जनों तक पहुंचाना शुरू करूंगा।

श्री रमेश जी (स्थानी सेवादार) धर्म सम्बन्धियो! आज 10 दिन हो गए हैं। दोनों श्रीमान जी ने बहुत ही एक से बढ़कर एक बहुत सरल और सादा शब्दों में सभाएं करवाई हैं। मैं सच्चे दिल से इनका धन्यवादी हूं। (उन्होंने आगे बढ़कर श्रीमान जी के चरणों को छूने का यत्न किया) कहा यदि कभी मैं इनके सत्कार के विरूद्ध बोला हो तो क्षमा करें। सभा सुनने से जीवन में सुधार आता है। (आप हमेशा की तरह तन, मन से सेवाकरी होते रहे)।

श्रीमान अनिल कुमार जी पदमपुर ने धर्म सम्बन्धियों को उच्च ग्रन्थों का बार बार पाठ करने और औरों तक पहुंचाने की प्रार्थना की।

श्रीमान ओम प्रकाश जी आदर्श अम्बाला अपने भाव प्रकाश के तौर पर अपनी एक कविता देकर रूख़स्त हो गए।

अशोक जी सिंगला अम्बाला (लिखवकर दिया) मैं भगवान को कोटि कोटि नमन करती हूं, जिन्होंने हम अबोधी आत्माओं के लिए सत्संग और सत्य धर्म बोध उत्सव निश्चित किया है। एक सभा में बहुत ज़ोर देकर आत्म बोध की आवश्यकता को समझाया गया कि अपने आपको जाने बिना सारी धन,

दौलत, विद्या, बाकी दुनियावी सामान किसी काम के नहीं। सभाओं में अलग अलग प्रश्न पूछकर और उन्हें समझाकर, हमें हमारी चलाने वाली भाव शक्तियों अर्थात पतनकारी शक्तियों के प्रति अबोधता के विषय में समझाया गया। हमारी कितनी कृपा-पात्र अवस्था है। मुझे अन्दर तक झंझोर दिया, मुझे फिकर पैदा हुआ कि मैंने अपनी निर्माणकारी शक्ति को अवश्य बचाना है। घर जाकर मुझे भगवान का बल मिले और मैं संग्राम कर सकूं

यह भी गहराई से अनुभव हुआ कि श्रीमान जी वयोवृद्ध अवस्था में हमारे भले के लिए कितना जोर लगाते हैं, अपनी बारी में कुछ ऋण परिशोध ज़रूर करना है।

श्रीमान बलबहादुर सिंह जी स्वंय ही सभा करवाते, थैला उठाकर समान लाते, चौथी मंजिल तक तीन बार रुक रुक कर चारपाईयां ऊपर चढ़ाते रहे। सेवाकारियों के गुण दिखाई दिए हैं। मैं अपनी श्रद्धा की खुराक को जिन्दा रख सकूं।

मुझे बड़े भैय्या के बहुत उपकार सामने आते हैं। जिनकी कृपा से मैं आत्म निर्भर होकर इज्ज़त की जिन्दगी जीने के योग्य हुई हूं। उनके बेहद उपकार हैं, उनके उपकारों का क्या ऋण परिशोध करूं। प्रतिदिन उनके लिए शुभकामना करती हूं।

समय बहुत हो चुका था, इसलिए यहीं सभा समाप्त की गई। सभापति जी ने परम पूजनीय भगवान, सहायकारी शक्तियों और सब सेवा करने वालों का धन्यवाद करके देव आरती का समूह गान और चार बार जय ध्वनि करके इस हितकर संग्राम को समाप्त किया गया।

दानियों की लिस्ट

श्री माता बख़तां बाई जी पदमपुर	11000	श्री ओ. पी. वर्मा जी	1000
श्री डा० विनोद जी खेड़ा	5000	श्री के. एस. चौहान	500
श्री डा० जैरथ जी	5000	श्री गोपाल जी	500
श्री बलदेव सिंह जी	2000	श्री सुन्दर लाल जी	500
श्री अशोक जी	2000	श्री अर्जुन सिह जी	500
श्री एस. एन. मदान जी	2100	श्री ज्ञान जी	500
श्रीमान खेम चन्दजी	2000	श्री रूप सिंह जी	500
श्री दूनी चन्द जी	1500	श्री अग्रवाल जी	500
श्री शशी जी खेड़ा	1500	श्री विशन सिंह जी	500
श्री दिवान जी	1000	श्री किताबों की बिक्री	900
श्री डा० नवजोत जी	1000	श्री धर्म जीवन आदि	500
श्री जगजीत सिंह जी	1000	श्री बलबीर शर्मा जी	500
श्री यशपाल जी लखनऊ	1000		

Published on 5th of the month
20

Regd. Postal No.CHD (0077) 2015-17
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

शरीरिक चाहत से मानसिक चाहत खतरनाक है

जो चाहे वह न मिले, तो उदासी, निराशा स्वभाविक है, लेकिन कभी कभी चाहा मिल जाए, तो भी मन सन्तुष्ट नहीं होता। दर असल चाहत का द्वंद अलग ही होता है। चाहत और असन्तुष्ट भाव एक साथ चलते हैं मान्सिक चाहत शरीरिक चाहत से भी ख़तरनाक है, शरीर की चाहतें तो फिर भी पारिवारिक, सामाजिक मान-मर्यादा से निंयत्रित हो जाती हैं, लेकिन मानसिक चाहतें तो शुरू होती ही अमर्यादा के साथ हैं।

विचारों में जितनी सात्विकता वा सद्गुण होंगे चाहत उतनी ही नियंत्रित हो जाएगी। इसको नियंत्रित करें, नहीं तो मनुष्य की चाहत असम्भव को पाने की चाहत में भी बदल जाती है। अपेक्षाहीन जीवन जीने की कोशिश करें।

सत्संग का प्रोग्राम

1) संगरूर :- 14 अक्तूबर 2016 से 16 अक्तूबर 2016 तक।

2) मल्लेका (सिरसा) :- 19 अक्तूबर 2016 से 22 अक्तूबर 2016 तक।

3) पद्मपुर एवं गंगा नगर :- 22 अक्तूबर 2016 से 30 अक्तूबर तक।

साथी सेवकों एवं सभी श्रद्धालुओं की सेवा में निवेदन है कि उपर दिए गए सत्संग में आकर अधिक से अधिक लाभ उठानें की कृपा करें।

प्रार्थी :- बलदेव सिंह

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts